भारत विकास परिषद्

प्रथम उत्कृष्टता सम्मान समारोह 2007 का भव्य समापन

नई दिल्ली - भारत विकास परिषद् के इतिहास में 14 अक्टूबर, 2007 का दिन एक स्वर्णिम पृष्ठ के रूप में स्मरण किया जाएगा जिस दिन परिषद् के संस्थापक डॉ. सूरज प्रकाश जी की स्मृति में परिषद् द्वारा 'उत्कृष्टता सम्मान प्रकल्प' आरम्भ किया गया। परिषद् के प्रथम उत्कृष्टता सम्मान कार्यक्रम 2006-07 का आयोजन राष्ट्रीय सहकारी यूनियन ऑडिटोरियम, 3 सीरी फोर्ट इन्स्टीटयूशनल एरिया, अगस्त क्रान्ति मार्ग (खेल गाँव के पास), नई दिल्ली में किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन के साथ विधिवत् रूप से वन्देमातरम् गायन के साथ हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि निवर्तमान मुख्य न्यायाधीश उच्चतम न्यायालय, न्यायमूर्ति रमेश चन्द्र लाहोटी तथा विशिष्ट अतिथि श्री कार्लोस ए.येरीगोन, भारत में पीरु के राजदूत थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायमूर्ति देवकीनन्दन धानुका जी ने की।

सम्मान प्राप्त करने वाली विभूतियाँ जगद्गुरु श्री श्री स्वामी राघवेश्वर भारती जी महाराज, संस्थापक श्री रामचन्द्रापुर मठ, हनिया, कर्नाटक, जहाँ सुदूर दक्षिण से थे वहीं सुदूर उत्तर भारत से परमार्थ निकेतन आश्रम, ऋषिकेश, उत्तराखण्ड के संस्थापक, परम पूज्य स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी महाराज थे।

न्यायमूर्ति देवकीनन्दन धानुका ने अपने प्रारंभिक भाषण में भारत विकास परिषद् के मुख्य संरक्षक दिवंगत डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी के बारे में जानकारी दी। इसके पश्चात् परिषद् के कार्यकारी अध्यक्ष रवीन्द्र पाल शर्मा ने अपने संक्षिप्त और सारगर्भित भाषण में परिषद् के विषय में तथा असके प्रकल्पों की जानकारी दी।

राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री एवं प्रकल्प प्रमुख हरीश जिन्दल ने परिषद् द्वारा उत्कृष्टता सम्मान के सम्बन्ध में सब को अवगत कराया।। मंच का कुशल संचालन राष्ट्रीय महामंत्री ईश्वर दत्त ओझा कर रहे थे।

परिषद् के संरक्षक न्यायमूर्ति एम.रामा जॉयस ने श्री श्री स्वामी राघवेश्वर भारती जी महाराज को अभिनन्दन पत्र भेंट किया तथा डॉ. प्रकाशवती शर्मा, राष्ट्रीय उपाध्यक्षा ने परम पूज्य स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी महाराज को अभिनन्दन पत्र समर्पित किया। साथ ही मुख्य अतिथि श्री लाहोटी एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायमूर्ति देवकीनन्दन धानुका द्वारा दोनों विभूतियों को शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया तथा राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष रवीन्द्र पाल शर्मा द्वारा एक-एक लाख रुपये का चैक, स्मृति चिन्ह, श्रीफल और शाल भेंट किया गया।

इस अवसर पर एक ऐसा अदभूत दृश्य भी देखा गया जब सुदूर उत्तर के स्वामी चिदानन्द जी ने पुष्पगुच्छ से दक्षिण के स्वामी राघवेश्वर भारती जी को अपना स्नेह प्रदान किया। ऐसा लगा जैसे उत्तर दक्षिण का समागम हो गया हो।

जगद्गुरु श्री श्री राघवेश्वर भारती जी महाराज ने अपने उद्बोधन में कहा कि गौमाता की सुरक्षा और उसके संवर्धन से ही राष्ट्र उन्नति के शिखर पर पहुँच सकता है। प्रत्येक भारतवासी को गाय पालनी चाहिए क्योंकि यही एक मात्र जीव है जो जन्म से मृत्यु तक हमें देती ही आई है। अब हमें भी उसके लिए कुछ करना चाहिए अतः सम्मान की इस राशि को इसी कार्य के निमित्त व्यय किया जाएगा। उन्होंने कहा कि जब तक गोहत्या बन्द नहीं होती तब तक मैं इस सम्मान को हृदय से नहीं हाथ से ही ग्रहण कर रहा हूँ।

स्वामी चिदानन्द जी ने सर्वप्रथम सम्मान राशि के चैक को माथे से लगाया तत्पश्चात् परिषद् के कार्यकारी अध्यक्ष रवीन्द्रपाल शर्मा को देते हुए कहा कि आप भी इस क्षेत्र में इतना अच्छा कार्य कर रहे हैं अतः यह राशि भी इसी कार्य में लगाएँ, तथा मुझे भी अपनी संस्था का सदस्य बना लें। इस के बाद अपने आशीर्वचन में भारत विकास परिषद् की सदस्य संख्या अपने स्वर्ण जयन्ती वर्ष तक पाँच हज़ार होने की कामना की। उन्होंने कहा कि आज अभिभावकों और माता-पिता को अपनी सन्तान को टी.वी. के स्थान पर संस्कार प्रदान करने चाहिए। यदि आपका संकल्प दृढ़ है तो कुछ भी कठिन नहीं है। इस शक्ति से आप सब कुछ अर्जित कर सकते हैं।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति रमेश चन्द्र लाहोटी, निवर्तमान मुख्य न्यायाधीश ने अपने भाषण में बताया कि व्यक्ति कितने प्रकार के होते हैं और उनका आचरण कैसा हो। अपनी बात की उन्होंने रामायण की चौपाईयों द्वारा पुष्टि भी की। उन्होंने बताया कि मनुष्य को पुण्य से सन्त मिलते हैं तथा प्रभु कृपा से सन्त पधारते हैं अतः आज दोनों बातें हो गई।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री कार्लोस ए.येरीगोन ने अपना भाषण संस्कृत के श्लोक से प्रारम्भ किया। उन्होंने कहा कि आज हमें आपस में मिलकर समस्याओं का हल ढूँढ़ना चाहिए तथा अपना सम्पर्क बनाए रखना चाहिए। आप का परिचय शिवकला समूह के मालिक तथा राष्ट्रीय संयोजक, विकास मित्र/विकास रत्न श्री महिम मित्तल ने दिया।

राष्ट्रीय संयोजक विकास मित्र/विकास रत्न श्री महिम मित्तल ने सभी अतिथियों एवं महान् विभूतियों के पधारने का आभार व्यक्त किया।

अन्त में परम पूज्य स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी महाराज ने भारत विकास परिषद् के मुख्य संरक्षक डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी तथा पेरु में आये भूकम्प के कारण स्वर्गगामी हुए बन्धु बान्धवों के लिए दो मिनट का मौन धारण कराया। तत्पश्चात् राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया। समस्त कार्यक्रम, भोजन तथा अल्पाहार की व्यवस्था बहुत ही सुन्दर रूप से शिवकला समूह के सौजन्य से की गई।

इस भव्य आयोजन कि लिए सभी कार्यकर्ता बधाई के पात्र हैं।